बाबू जगजीवन राम के जन्म दिवस के अवसर पर श्री प्रणब मुखर्जी, माननीय वित्त मंत्री द्वारा दिया गया स्मृति व्याख्यायन

(5 अप्रैल, 2010)

बाबू जगजीवन राम स्वतंत्रता पूर्व और पश्चात् भारत के अत्यधिक सम्माननीय नेताओं में से एक थे। आप एक महान वक्ता, विशिष्ट संसदविद और एक सक्षम प्रशासक थे। आप भारत के स्वतंत्रता संग्राम में एक बहादुर योद्धा और दमन के खिलाफ संदेश के एक महान प्रणेता और आयोजक थे।

राष्ट्रों के विशाल इतिहासों की तुलना में, हममें से प्रत्येक व्यक्ति समय की एक झलक से अधिक स्थान नहीं रखता है। फिर भी, संक्षिप्त समय में, कुछेक राष्ट्र के इतिहास पर अपने पदचिह्नों को छोड़ने में सफल रहे जिन्हें वर्षा, धूप, युद्ध और उपद्रव में से कोई नहीं मिटा सकते हैं। बाबू जगजीवन राम ऐसे ही व्यक्ति थे और इस राष्ट्र के निर्माण में प्रारंभिक वर्षों पर आपकी छाप राष्ट्रीय उत्पत्ति संहिता का भाग है। भारत के इतिहास को देखने में आपने एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है और वर्तमान पीढ़ियों के समाप्त हो जाने के पश्चात् लम्बे समय तक भारत के भाग्य पर आपकी छाप बनी रहेगी।

जगजीवन राम की जीवन कहानी एक अनुश्रुति के समान पढ़ी जाती है। आप 1946 में, जवाहर लाल नेहरू की अंतरिम सरकार में सबसे युवा मंत्री थे। आप सरकार में अबाधित कार्यकाल का रिकार्ड सृजन करने में कुल मिलाकर 1979 तक मंत्री रहे। आपने इस समस्त राष्ट्र में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। आप हरित क्रांति के दौरान कृषि मंत्री थे। जहां कहीं आप गए, आपने अपनी उल्लेखनीय कार्य क्षमता और संगठनात्मक कौशल की छाप छोड़ी। किन्तु सबसे अधिक, आपने जातिवाद की बुराई के प्रति हमें सचेत करने में गांधी जी और अम्बेडकर के साथ एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी और आप अस्पृश्यता की सदियों पुरानी परंपरा को तोड़ने में हमारी सहायता करने में अग्रणी रहे थे।

आपने प्रत्यक्षतः जातिवाद की पीड़ा को देखा था। चूंकि आप ग्राम चंदवा, जिला शाहबाद, अब भोजपुर, बिहार में अछूतों के एक परिवार में जन्में थे। आपके विद्रोह की भावना प्रारंभ में ही प्रमाणित थी जब आरा कस्बे के विद्यालय में आपसे कहा गया था कि आप न तो हिंदू विद्यार्थियों और न ही मुस्लिम विद्यार्थियों के लिए रखे गए घड़ों में पानी नहीं पी सकते और अछूतों के लिए एक पृथक घड़ा दिया गया। विरोध में, आपने घड़ा तोड़ दिया और प्रधानाचार्य को झुकना पड़ा था और विशेष घड़ा हटा दिया गया।

प्रारंभ से ही, आपकी उल्लेखनीय बौद्धिक क्षमताएं थी। आपने विद्यालय में ही बंगाली इस कारण सीखी थी कि आप बंकिम चन्द्र के आनन्द मठ को मूल भाषा में पढ़ना चाहते थे। जब, मैं जातिगत भेदभाव की सभी वंचनाओं के बारे में सोचता हूं जो बाबू जगजीवन राम को झेलनी पड़ी और आप भारतीय राजनैतिक फलक पर आपके आगमन को गांधी जी द्वारा ''वर्णित आग में तपे हुए सोने'' के समान निकले थे, भारत के इस महान सपूत के लिए एक विशेष सम्मान महसूस करना असंभव नहीं है।

जगजीवन राम बनारस हिंदू विश्वविद्यालय और कलकत्ता विश्वविद्यालय में अध्ययन के लिए गए थे। कलकत्ता में रहते हुए आपने 20 के अंतिम दशक में एक मजदूर रैली आयोजित की थी, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने आपको देख लिया था और इसके पश्चात् बाबू जगजीवन राम ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। आप भारत में हमारे समाज में वंचित जातियों और वर्गों की प्रतिमूर्ति बन गए थे। आप भारत के लिए एक वरदान थे और हममें से प्रत्येक भारतीय को इस महान राष्ट्र के महत्वपूर्ण स्थापना वर्षों के दौरान ऐसा एक नेता होने पर गर्व होना चाहिए। जैसा कि बाबू जगजीवन राम के बारे में गांधी जी ने 17 अप्रैल, 1937 की अपनी 'हरिजन पत्रिका' में उल्लेख किया था ''दलित वर्गों के इस व्यक्ति ने गरीबी में संपन्नता, निम्नता में उच्चता और तिरस्कार और अपमान के बीच में स्व-आदर कैसे प्रदर्शित किया जाता है'' यह दिखा दिया।

इस टिप्पणी से एक संकेत लेते हुए मैंने इस अवसर को उस विकास जो जातियों, वर्ग और धर्म, ऐसा विकास जो समाज के सभी तबकों तक पहुंचता है, से परे हो बोलने का उपयोग करने का निश्चय किया है। समकालीन भारतीय द्वारा सदैव इसकी सराहना नहीं की जाती है कि स्वतंत्र भारत की महानतम उपलब्धियों में से एक यह कि यह पहला अवसर था, यह एक सहस्त्राब्दी अथवा दो हो सकती हैं कि जाति और अस्पृश्यता की प्रथा के उन्मूलन में गंभीर प्रयास किए थे। किसी उपनिवेशवादी सरकार ने सैकड़ों वर्षों के इस अन्याय को समाप्त करने के लिए कोई गंभीर प्रयास नहीं किया था। यह महानतम और अत्यधिक साहसी कदमों में से एक था जो संस्थापक नेताओं ने उस समय उठाया था जब उन्होंने इस नये राष्ट्र के संविधान में इसे लिख करके अस्पृश्यता को समाप्त किया था जिसके बाबू जी एक अभिन्न अंग थे। इन्होंने स्वतंत्रता को न केवल ब्रिटिश शासन से आजादी के रूप में देखा था बल्कि भारतीयों के बीच चाहे वे किसी धर्म अथवा किसी जाति के हों समानता स्थापित करने का एक कदम था। पंडित जवाहर लाल नेहरू की भाषा में, आजादी का अभिप्राय राजनैतिक दासता से मुक्ति, आर्थिक गुलामी से स्वतंत्रता और सांस्कृतिक गतिहीनता से मुक्ति है।

मैं इस साहसिक कदम की सराहना करते हुए, आपको चेतावनी देना चाहूंगा कि यह कार्य अभी अधूरा है। जो भारत ने किया है वह अभी पहला कदम है। हमारा अंतिम उद्देश्य एक ऐसे समाज को सृजित करना होना चाहिए जिसमें किसी व्यक्ति की जाति, धर्म और लिंग किसी व्यक्ति के